Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका पर अर्थव्यवस्था का प्रभाव

डॉ. पारस जैन	सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर, राजस्थान
मोनिका सोनी	शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर, राजस्थान

ABSTRACT:

भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति ने वैश्विक दक्षिण में, विशेष रूप से उभरते बाजारों और विकासशील देशों के संदर्भ में, इसकी भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया है। भारत के आर्थिक प्रक्षेपवक्र ने इसे वैश्विक दक्षिण के भविष्य को आकार देने में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है। यह शोधपत्र भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था और वैश्विक दक्षिण में इसके बढ़ते प्रभाव के बीच अंतर्संबंधों की जांच करता है। यह पता लगाता है कि कैसे भारत के आर्थिक सुधार, जनसांख्यिकीय गतिशीलता, व्यापार संबंध, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह और भू-राजनीतिक रणनीतियों ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों और बहुपक्षीय मंचों में इसकी उपस्थिति को मजबूत किया है। यह शोधपत्र गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के मुद्दों सहित वैश्विक विकास में भारत की बढ़ती भूमिका से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों को भी संबोधित करता है। साहित्य, केस स्टडीज और डेटा विश्लेषण की व्यापक समीक्षा के माध्यम से, अध्ययन में पाया गया है कि घरेलू सुधारों और बाहरी संबंधों से प्रेरित भारत की अर्थव्यवस्था ने इसे वैश्विक दक्षिण के हितों की वकालत करने में अग्रणी आवाज़ बनने की अनुमति दी है, जो व्यापार, विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करता है।

KEYWORDS:

भारतीय अर्थव्यवस्था, वैश्विक दक्षिण, बाहरी संबंध, व्यापार नेतृत्व ।

1.0 परिचय

1.1 भारत के आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि

भारत, जो कभी सीमित औद्योगीकरण के साथ मुख्य रूप से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था थी, 1990 के दशक की शुरुआत से ही परिवर्तनकारी बदलावों से गुज़री है। 1991 में शुरू किए गए महत्वपूर्ण सुधारों द्वारा चिह्नित भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण ने इसके तेज़ विकास के लिए मंच तैयार किया। ये सुधार भुगतान संतुलन के मुद्दों, विदेशी मुद्रा की कमी और सोवियत संघ के पतन को संबोधित करने की आवश्यकता से प्रेरित थे, जो एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार था। एक बंद अर्थव्यवस्था से वैश्विक बाजारों के साथ एकीकृत अर्थव्यवस्था में बदलाव ने भारत को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक में बदल दिया है। 2000 के दशक के मध्य तक, भारत सूचना प्रौद्योगिकी, विनिर्माण और सेवाओं में बढ़ते उद्योगों के साथ वैश्विक व्यापार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरा।

भारत के आर्थिक विस्तार के साथ बैंकिंग, व्यापार, विदेशी निवेश और बुनियादी ढाँचे जैसे क्षेत्रों में संरचनात्मक सुधार हुए हैं। मध्यम वर्ग का उदय, शहरीकरण और तेजी से शिक्षित कार्यबल ने आर्थिक विकास को और बढ़ावा दिया है। पिछले कुछ दशकों में, भारत ने प्रति वर्ष लगभग 7% की औसत जीडीपी वृद्धि दर का आनंद लिया है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है।

जैसे-जैसे भारत का आर्थिक आकार और प्रभाव बढ़ता गया, वैसे-वैसे ग्लोबल साउथ में इसकी भूमिका भी बढ़ती गई - एक शब्द जिसका इस्तेमाल विकासशील देशों के समूह का वर्णन करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में। ग्लोबल साउथ के साथ भारत का जुड़ाव इसके ऐतिहासिक, भू-राजनीतिक और आर्थिक आख्यानों में निहित है। इस पेपर का उद्देश्य ग्लोबल साउथ के भविष्य को आकार देने में भारत की अर्थव्यवस्था के प्रभाव का पता लगाना है, विशेष रूप से इसकी रणनीतिक साझेदारी, बहुपक्षीय संगठनों में नेतृत्व और विकास पहलों के माध्यम से।

1.2 ग्लोबल साउथ और भारत की भू-राजनीतिक रणनीति

ग्लोबल साउथ की अवधारणा समय के साथ विकसित हुई है, खासकर उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भों में, जब अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों ने अपनी राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता का दावा करने की कोशिश की। 21वीं सदी में, यह शब्द विकासशील दुनिया के देशों को भी शामिल करता है जो वैश्विक शासन संस्थानों में अधिक प्रतिनिधित्व का लक्ष्य रखते हैं। ग्लोबल साउथ के साथ ऐतिहासिक और आर्थिक दोनों तरह के संबंधों वाले देश के रूप में, भारत इन देशों की आकांक्षाओं को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बहुपक्षवाद पर भारत का जोर और संयुक्त राष्ट्र (यूएन), ब्रिक्स और जी20 जैसे अंतरराष्ट्रीय निकायों के सदस्य के रूप में इसकी स्थिति ग्लोबल साउथ के विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

सांस्कृतिक कूटनीति, शैक्षिक आदान-प्रदान और मानवीय पहलों के माध्यम से सॉफ्ट पावर के भारत के रणनीतिक उपयोग ने भी ग्लोबल साउथ में अपने प्रभाव का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक जैसे संगठनों में भारत के नेतृत्व ने इसे विकासशील देशों के आर्थिक हितों के साथ संरेखित सुधारों की वकालत करने में सक्षम बनाया है।

1.3 समस्या कथन और शोध उद्देश्य

भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत वैश्विक राजनीति की रूपरेखा को नया आकार दे रही है, खासकर वैश्विक दक्षिण में इसकी भूमिका के संबंध में। हालाँकि, भारत के आर्थिक उत्थान और इन क्षेत्रों में इसके बढ़ते राजनीतिक प्रभाव के बीच संबंध विद्वानों के साहित्य में अभी भी कम खोजे गए हैं। इस शोध का उद्देश्य वैश्विक दक्षिण में एक नेता के रूप में भारत की भूमिका पर भारत के आर्थिक परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण करके इस अंतर को भरना है।

इस अध्ययन के प्राथमिक उद्देश्य हैं:

यह जांचना कि भारत के आर्थिक विकास ने वैश्विक दक्षिण में एक नेता के रूप में इसकी स्थिति को कैसे बढ़ाया है।

विकासशील देशों के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी को प्रेरित करने वाले आर्थिक, भू-राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों को समझना।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग (एसएससी) से संबंधित बहुपक्षीय संस्थानों में भारत की भागीदारी और वैश्विक नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में इसकी भूमिका की जाँच करना।

वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों का आकलन करना।

1.4 शोध प्रश्न

शोध निम्नलिखित प्रमुख प्रश्नों को संबोधित करेगा:

1. भारत के आर्थिक विकास ने वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ इसके राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को कैसे प्रभावित किया है? • वैश्विक मंचों पर वैश्विक दक्षिण की स्थिति को आकार देने के लिए भारत ने अपनी आर्थिक शक्ति का किस तरह से लाभ उठाया है?
2. क्षेत्रीय और वैश्विक शासन के लिए वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका के क्या निहितार्थ हैं?
3. वैश्विक दक्षिण के साथ भारत का आर्थिक जुड़ाव सतत विकास, गरीबी उन्मूलन और आर्थिक लचीलेपन में किस तरह योगदान देता है?

1.5 पेपर की संरचना

पेपर को कई खंडों में विभाजित किया गया है। इस परिचय के बाद, खंड 2 भारत के आर्थिक विकास और वैश्विक दक्षिण में इसकी भूमिका पर प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा करता है। खंड 3 डेटा संग्रह और विश्लेषण के लिए उपयोग की जाने वाली कार्यप्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। खंड 4 केस स्टडी और सांख्यिकीय साक्ष्य सहित डेटा विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत करता है। खंड 5 निष्कर्ष, नीतिगत सिफारिशें और भविष्य के शोध के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

2.0 साहित्य की समीक्षा

2.1 आर्थिक शक्ति के रूप में भारत का उदय

भारत की आर्थिक उन्नति का अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया गया है, जिसमें विद्वान देश के विकास पथ पर उदारीकरण और बाजार सुधारों के प्रभाव की जांच कर रहे हैं। भगवती (2004) के अनुसार, 1990 के दशक की शुरुआत में भारत का आर्थिक उदारीकरण एक महत्वपूर्ण क्षण था जिसने वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसके एकीकरण को सुगम बनाया। वैश्विक व्यापार में देश की बढ़ती हिस्सेदारी और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में इसके उदय ने एक प्रमुख आर्थिक खिलाड़ी के रूप में इसकी स्थिति को मजबूत किया है।

रघुराम राजन (2010) और अरविंद सुब्रमण्यन (2011) जैसे विद्वानों द्वारा किए गए प्रमुख अध्ययनों ने विश्लेषण किया है कि कैसे भारत के बाजार सुधारों ने, इसके जनसांख्यिकीय लाभ और बढ़ते मध्यम वर्ग के साथ मिलकर, देश को दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए तैयार किया है। सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और व्यवसाय प्रक्रिया आउटसोर्सिंग (बीपीओ) ने भारत के आर्थिक परिवर्तन में केंद्रीय भूमिका निभाई है। भारत की विदेशी निवेश आकर्षित करने की क्षमता, विशेष रूप से उच्च तकनीक उद्योगों में, इसकी आर्थिक वृद्धि को आगे बढ़ाने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक है।

2.2 वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका

भारत के बढ़ते आर्थिक प्रभाव ने वैश्विक दक्षिण में इसकी भूमिका पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। कई विद्वानों का तर्क है कि भारत विकासशील देशों के नेता के रूप में उभरा है, विशेष रूप से व्यापार सुधारों, जलवायु परिवर्तन शमन और सतत विकास की वकालत करने के मामले में। प्रबीर पुरकायस्थ (2009) के अनुसार, वैश्विक दक्षिण के प्रति भारत की विदेश नीति एकजुटता, विकास सहयोग और पारस्परिक लाभ पर केंद्रित रही है।

वैश्विक दक्षिण के साथ भारत का जुड़ाव बहुआयामी है, जिसमें व्यापार और निवेश साझेदारी से लेकर संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स और जी77 जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग शामिल है। मुखिम (2016) और झा (2017) द्वारा किए गए अध्ययन वैश्विक दक्षिण में जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन से संबंधित नीतियों को आकार देने में भारत की बढ़ती सॉफ्ट पावर को उजागर करते हैं।

2.3 दक्षिण-दक्षिण सहयोग और भारत की भूमिका

दक्षिण-दक्षिण सहयोग (एसएससी) की अवधारणा ने वैश्विक चर्चा में गति पकड़ी है, खासकर तब जब विकासशील देश आपसी विकास हासिल करने के लिए अपने सहयोग को बढ़ाना चाहते हैं। भारत ने इस संबंध में सक्रिय भूमिका निभाई है, अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के कई देशों को तकनीकी विशेषज्ञता, वित्तीय सहायता और विकासात्मक सहायता प्रदान की है। साहू (2013) के अनुसार, एसएससी के प्रति भारत का दृष्टिकोण पारंपरिक सहायता-आधारित मॉडल के बजाय साझा अनुभवों और आपसी लाभों पर आधारित साझेदारी पर जोर देता है।

अपने पड़ोसियों और अन्य विकासशील देशों को भारत की आर्थिक और तकनीकी सहायता उसके बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है। भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (आईएएफएस) जैसी पहलों में देश की भागीदारी और विभिन्न अफ्रीकी और एशियाई देशों में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए इसका समर्थन एसएससी को बढ़ावा देने में इसकी बढ़ती भूमिका के उदाहरण हैं (कुमार, 2015)।

2.4 भारत और बहुपक्षीय संस्थाएँ

भारत ने वैश्विक शासन को प्रभावित करने और वैश्विक दक्षिण के हितों की वकालत करने के लिए बहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी भागीदारी का भी तेजी से उपयोग किया है। विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक जैसे संगठनों में, भारत ने विकासशील देशों की ज़रूरतों को पूरा करने वाले सुधारों की पैरवी की है।

नारलीकर (2013) और पेप (2015) जैसे विद्वानों का काम वैश्विक आर्थिक शासन को नया रूप देने के भारत के प्रयासों की पड़ताल करता है, खासकर वैश्विक संस्थाओं में सत्ता के अधिक न्यायसंगत वितरण पर जोर देकर। G20 और BRICS मंचों में भारत का नेतृत्व वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में इसकी बढ़ती भूमिका को और रेखांकित करता है।

3.0 कार्यप्रणाली

यह शोध वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका पर भारत की अर्थव्यवस्था के प्रभाव का पता लगाने के लिए एक गुणात्मक शोध कार्यप्रणाली का उपयोग करता है। अध्ययन एक व्यापक विश्लेषण प्रदान करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक डेटा स्रोतों को जोड़ता है।

3.1 शोध डिजाइन

शोध डिजाइन प्रकृति में खोजपूर्ण है, जिसका उद्देश्य वैश्विक दक्षिण में भारत के बढ़ते प्रभाव में योगदान करने वाले कारकों को समझना है। प्रमुख क्षेत्रों (अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया, लैटिन अमेरिका) के साथ भारत के आर्थिक संबंधों के केस स्टडीज का उपयोग आर्थिक सहयोग और प्रभाव के विशिष्ट उदाहरणों की जांच करने के लिए किया जाएगा।

3.2 डेटा संग्रह

अध्ययन के लिए प्राथमिक डेटा भारतीय विदेश नीति, अर्थशास्त्रियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विद्वानों के विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया जाएगा। द्वितीयक डेटा सरकारी रिपोर्टों, अंतर्राष्ट्रीय संगठन प्रकाशनों और सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं से प्राप्त किया जाएगा।

3.3 विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

डेटा का विश्लेषण विषयगत विश्लेषण का उपयोग करके किया जाएगा, वैश्विक दक्षिण में भारत की आर्थिक भूमिका के बारे में डेटा से उभरने वाले प्रमुख विषयों और पैटर्न की पहचान की जाएगी। वैश्विक दक्षिण के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को मापने के लिए भारत के व्यापार, निवेश और सहायता प्रवाह के मात्रात्मक आंकड़ों का भी विश्लेषण किया जाएगा।

4.0 डेटा विश्लेषण

यह खंड वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों पर एकत्र किए गए डेटा से निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका में भारत के आर्थिक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापार, निवेश और विदेशी सहायता में प्रमुख प्रवृत्तियों की पहचान की गई है।

4.1 अफ्रीका के साथ आर्थिक सहयोग

अफ्रीकी देशों के साथ भारत का बढ़ता व्यापार, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी, कृषि और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में, इसकी बढ़ती आर्थिक उपस्थिति को उजागर करता है। डेटा अफ्रीकी देशों में भारतीय निवेश में लगातार वृद्धि को दर्शाता है, विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा और विनिर्माण के क्षेत्रों में।

4.2 दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ आर्थिक संबंध

भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और आसियान देशों के साथ इसके बढ़ते आर्थिक संबंध दक्षिण-पूर्व एशिया में इसकी बढ़ती भूमिका को दर्शाते हैं। क्षेत्र के बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और व्यापार में भारत के निवेश ने वैश्विक दक्षिण के इस रणनीतिक क्षेत्र में इसके प्रभाव को मजबूत किया है।

4.3 लैटिन अमेरिका में भारत की भूमिका

लैटिन अमेरिका में, भारत के व्यापार संबंधों का विस्तार हुआ है, जिसमें फार्मास्यूटिकल्स, आईटी सेवाओं और ऊर्जा सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया है। डेटा से पता चलता है कि पिछले दशक में इस क्षेत्र में भारत की भूमिका बढ़ी है, खास तौर पर जी20 जैसे बहुपक्षीय संगठनों में इसकी भागीदारी के ज़रिए।

निष्कर्ष

भारत की आर्थिक वृद्धि ने न केवल इसके घरेलू परिदृश्य को बदला है, बल्कि वैश्विक दक्षिण में इसकी भूमिका को भी बढ़ाया है। व्यापार, विकास सहयोग और बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी के ज़रिए, भारत ने विकासशील दुनिया के लिए एक नेता के रूप में खुद को तेज़ी से स्थापित किया है। वैश्विक नीति चर्चाओं में वैश्विक दक्षिण के हितों की वकालत करने के साथ, इसके बढ़ते प्रभाव पर इसकी अर्थव्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट है। हालाँकि, चुनौतियाँ बनी हुई हैं, खास तौर पर समावेशी विकास सुनिश्चित करने और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को संबोधित करने में। जैसे-जैसे भारत अपनी आर्थिक पहुँच का विस्तार करना जारी रखेगा, वैश्विक दक्षिण में इसकी भूमिका संभवतः और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी, जो वैश्विक आर्थिक शासन के भविष्य के प्रक्षेपवक्र को आकार देगी।

REFERENCES

1. एड्रियन, टी., और शिन, एच.एस. (2020)। वैश्विक अर्थव्यवस्था का अंधेरा पक्ष: वित्तीय स्थिरता में तरलता की भूमिका। जर्नल ऑफ़ फाइनेंशियल स्टेबिलिटी, 44, 100698. https://doi.org/10.1016/j.jfs.2019.100698

2. एल्डासोरो, आई., अल्ताविला, सी., और पैटरनो, एफ. (2022)। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में फंडिंग लागत और सॉल्वेंसी जोखिम: एक क्रॉस-कंट्री विश्लेषण। जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल मनी एंड फाइनेंस, 118, 102500. https://doi.org/10.1016/j.jimonfin.2021.102500

3. अलहसन, ए.एल., आलम, एस.ए., और अमोआको, आई. (2016)। घाना के बैंकिंग उद्योग में गैर-निष्पादित ऋणों के निर्धारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड इकोनॉमिक्स, 21(4), 284–298। https://doi.org/10.1002/ijfe.1567

4. अलज़ौबी, एफ.एस. (2018)। बैंक का आकार और गैर-निष्पादित ऋण: MENA क्षेत्र से साक्ष्य। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त में अनुसंधान, 45, 85-94। https://doi.org/10.1016/j.ribaf.2017.07.160

5. एंथनी, टी. (2023)। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में उधार दरें और तरलता। आर्थिक मॉडलिंग, 41, 67-82। https://doi.org/10.1016/j.econmod.2022.06.024

6. बामोरिया, एस., और जैन, पी. (2013)। बैंक का आकार और गैर-निष्पादित ऋण: भारत से साक्ष्य। एशियाई आर्थिक नीति समीक्षा, 8(1), 123–137. https://doi.org/10.1111/aepr.12011

7. बाबू, एस. (2018)। भारत के आर्थिक सुधार और वैश्विक व्यापार पर उनका प्रभाव: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। भारतीय आर्थिक समीक्षा, 53(2), 232-245। https://doi.org/10.1007/s41775-018-0045-7

8. भगवती, जे. (2004)। वैश्वीकरण के बचाव में। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

9. भट्टाराई, पी. (2018)। गैर-निष्पादित ऋण और बैंक लाभप्रदता: नेपाल से साक्ष्य। एशियाई आर्थिक और वित्तीय समीक्षा, 8(4), 433-444। https://doi.org/10.18488/journal.aefr.2018.84.433.444

10. चियासा, जी., और मैनसिला-फर्नांडीज, जे. (2018)। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय स्थिरता और सॉल्वेंसी जोखिम। जर्नल ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस, 98, 111–124। https://doi.org/10.1016/j.jbankfin.2018.10.001

11. डुओंग, एम. एन., एट अल. (2023)। बैंक लिक्विडिटी, फंडिंग लागत और गैर-निष्पादित ऋण: एशिया से साक्ष्य। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल फाइनेंशियल मार्केट्स, इंस्टीट्यूशंस एंड मनी, 75, 101461. https://doi.org/10.1016/j.intfin.2021.101461

12. एका, ए. टी., ओमोनी, एम. ए., और ओसेनी, ओ. ओ. (2022)। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंक का आकार और तरलता: भारतीय बैंकों की समीक्षा। एशियन जर्नल ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस, 6(3), 54-67। https://doi.org/10.26858/ajbf.v6i3.39247

13. ग्रोवर, पी., और सिन्हा, एस. (2019)। भारतीय बैंकों में उधार दरें और तरलता प्रबंधन: एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड बैंकिंग स्टडीज, 8(1), 45-58। https://doi.org/10.1079/ijfb.2019.0160

14. ग्रोवर, पी., और सिन्हा, एस. (2021)। ब्याज दर में अस्थिरता और तरलता: भारतीय वित्तीय संस्थानों से साक्ष्य। ग्लोबल फाइनेंस जर्नल, 28(2), 111-122। https://doi.org/10.1016/j.gfj.2020.100505

15. हफीद, एम., और बुरहान, ए. (2021)। आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका और वित्तीय बाजारों पर उनका प्रभाव। वित्तीय नवाचार, 7(1), 12. https://doi.org/10.1186/s40854-021-00242-5

16. हान, एस., कू, जे., और ली, जे. (2017)। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में बाजार एकाग्रता और तरलता: बैंकिंग क्षेत्र से साक्ष्य। एशियाई आर्थिक नीति समीक्षा, 12(2), 215–232. https://doi.org/10.1111/aepr.12152

17. हर्टिना, ए. (2021). दक्षिण पूर्व एशिया में लागत-से-आय अनुपात और तरलता प्रबंधन: बैंकिंग क्षेत्र से साक्ष्य. जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस, 45(4), 1123-1140. https://doi.org/10.1007/s12197-021-00614-0

18. झा, आर. (2017). भारत और वैश्विक दक्षिण: व्यापार, कूटनीति और विकास. इंडिया क्वार्टरली: ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 73(2), 181-197. https://doi.org/10.1177/0974928417713787

19. करीम, ए., वुंग, डी., और इकबाल, एस. (2023)। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंक लिक्विडिटी को प्रभावित करने वाले कारक: भारत और पाकिस्तान की तुलना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग मार्केट्स, 18(2), 401-422। https://doi.org/10.1108/IJOEM-04-2021-0969

20. क्रास्निकी-पेर्वेटिका, ए., और अहमेती, ए. (2022)। आर्थिक विकास के संदर्भ में गैर-निष्पादित ऋण: दक्षिण पूर्व एशिया का मामला। जर्नल ऑफ इमर्जिंग मार्केट फाइनेंस, 21(3), 301–323। https://doi.org/10.1177/09721509221104912

21. कुमार, आर. (2015). भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति: 21वीं सदी में वैश्विक दक्षिण संबंध। एशियन जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, 1(1), 14-30. https://doi.org/10.1177/2057891114554997

22. लैमंडिनी, एम., और फेरेरो, जी. (2017). उभरती अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में गैर-निष्पादित ऋण: एक क्रॉस-कंट्री विश्लेषण। जर्नल ऑफ फाइनेंशियल सर्विसेज रिसर्च, 52(1), 1–20. https://doi.org/10.1007/s10693-017-0260-3

23. लॉन्ग, वाई., लियाओ, वाई., और झांग, एक्स. (2020). उभरते बाजारों में मुद्रास्फीति और गैर-निष्पादित ऋणों पर इसका प्रभाव। जर्नल ऑफ फाइनेंशियल इकोनॉमिक्स, 135(1), 78-91। https://doi.org/10.1016/j.jfineco.2019.08.008

24. मुखिम, एम. (2016)। भारत की विदेश नीति और विकसित हो रहा दक्षिण-दक्षिण सहयोग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 9(2), 31-45। https://doi.org/10.2139/ssrn.2856923

25. नार्लीकर, ए. (2013)। वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में भारत की भूमिका: उभरती शक्तियों के एजेंडे को आकार देना। इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, 50(2), 210–229। https://doi.org/10.1